

परावर्ती वि. (तत्.) 1. परावर्ती होने वाला 2. फिर से पूर्व-स्थिति में आने वाला, अपने स्थान पर लौटकर आने या पहुँचने वाला।

परावह पुं. (तत्.) वायु के सात भेदों में से अंतिम भेद।

पराविद्ध पुं. (तत्.) कुबेर, यक्षपति।

परावृत्त वि. (तत्.) 1. जो पलट गया हो 2. जो पूर्वलक्ष्य को छोड़ चुका हो।

परावृत्ति स्त्री. (तत्.) परावृत्त होने का भाव।

परावेदी स्त्री. (तत्.) एक औषधीय पौधा, भटकटैया।

पराशर पुं. (तत्.) 1. एक प्रसिद्ध गोत्र-प्रवर्तक ऋषि जो महर्षि वशिष्ठ के पौत्र थे, पराशर स्मृति के रचयिता 2. आयुर्वेद के एक प्रसिद्ध आचार्य 3. पराशरी संहिता नामक ज्योतिष ग्रंथ के रचयिता।

पराशरी पुं. (तत्.) 1. भिक्षुक 2. संन्यासी।

पराश्रय पुं. (तत्.) 1. दूसरे का सहारा, अवलंब 2. पराधीनता, परवशता।

पराश्रित वि. (तत्.) 1. जो दूसरों के आश्रय पर हो, जिसका कार्य किसी दूसरे के सहारे से चलता हो 2. दूसरे के अधीन, दूसरे के भरोसे।

परास पुं. (तत्.) 1. रांगा, टीन 2. दे. पलास, पलाश।

परासक्त वि. (तत्.) 1. दूसरे पर आसक्त, दूसरे से बँधा हुआ, किसी अन्य के वश में।

परासन पुं. (तत्.) हत्या, वध करना, हनन, मारण, जान से मारना।

परास्त वि. (तत्.) 1. पराजित, हारा हुआ 2. विजित, ध्वस्त 3. प्रभावहीन, दबा हुआ 4. जो स्वीकृत न हो, अस्वीकृत 5. फेंका हुआ, क्षिप्त।

परास्तता स्त्री. (तत्.) परास्त होने का भाव।

पराह पुं. (तत्.) दूसरा दिन, वर्तमान से अगला दिन, आगे या पीछे का दिन, किसी भी दिन से अगला दिन।

पराहति स्त्री. (तत्.) प्रत्युत्तर, खंडन, विरोध।

पराहन वि. (तत्.) 1. दूर किया या हटाया हुआ 2. अपराहन, दोपहर के बाद का समय 3. दिन का तीसरा पहर।

परिंद पुं. (फा.) पक्षी, चिड़िया, परों वाला प्राणी।

परि उप. (तत्.) संस्कृत भाषा का एक उपसर्ग, शब्द के पहले लगने से इस उपसर्ग से अर्थ में निम्नलिखित वृद्धि होती है 1. आस-पास, चारों ओर यथा- परिभ्रमण, परिक्रमण, परिधि आदि 2. पूरी तरह, अच्छी तरह, हर प्रकार से यथा, परिकल्पना, परिवर्द्धन, परिरक्षण परिपक्वता आदि 3. अत्यधिक या बहुत जोर से यथा- परिकंप, परिताप, परिश्रम 4. दोष दिखाते हुए, निंदनीय रूप में यथा- परिवाद, परिहास आदि।

परिकंप पुं. (तत्.) 1. भय, डर 2. अत्यधिक, कंपन, कंपकंपी।

परिकथा स्त्री. (तत्.) 1. अंतर्कथा, कथा या कहानी के अंतर्गत आने वाली दूसरी संबद्ध कथा 2. कहानी 3. बौद्धों के मतानुसार धार्मिक कथा।

परिकर पुं. (तत्.) 1. पलंग, पर्यंक 2. घर-परिवार के लोग 3. संकुल यथा- सब का अपना परिवार-परिकर होता है 4. पटका, कमरबंद 5. नाटक की घटनाओं की संक्षिप्त सूचना, इसे बीज भी कहा जाता है 6. कार्य में सहायक, सहकर्मी।

परिकरांकुर पुं. (तत्.) अर्थालंकार का एक प्रकार जिसमें विशेष्य का कथन किसी विशिष्ट अभिप्राय से किया जाता है।

परिकर्तन पुं. (तत्.) 1. काटना, कर्तन, चारों ओर से काटना 2. गोलाकार कर्तन, वृत्ताकार काटना।

परिकर्तिका पुं. (तत्.) 1. तीखा दर्द, चुभने वाली पीड़ा 2. शूल।

परिकर्म पुं. (तत्.) 1. शरीर में सौंदर्य या निखार लाने के लिए औषधीय लेप लगाना, शरीर-संस्कार करना 2. पैर रंगना, महावर लगाना 3. अंकों का परस्पर योग, गुणन, भाग आदि।